ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

डायरी का एक पन्ना
क्लास -१०

पाठ का नाम -डायरी का एक पन्ना

पाठ २

PPT -3

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

पाठ व्याख्या

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

- 11 बजे मारवाड़ी बालिका विद्यालय की लड़कियों ने अपने विद्यालय में झण्डोत्सव मनाया। जानकीदेवी ,मदालसा (मदालसा बजाज -नारायण) आदि भी आ गई थी। लड़कियों को, उत्सव का क्या मतलब है ,समझाया गया। एक बार मोटर में बैठ कर सब तरफ घूमकर देखा तो बहुत अच्छा मालूम हो रहा था। जगह -जगह फ़ोटो उतर रहे थे। अपने भी फ़ोटो का काफी प्रबंध किया था। दो -तीन बजे कई आदमियों को पकड़ लिया गया। जिसमें मुख्य पूर्णोदास और पुरुषोत्तम राय थे।
  झण्डोत्सव - झंडा फहराने का समारोह
  11 बजे मारवाड़ी बालिका विद्यालय की छात्राओं ने अपने विद्यालय में झंडा फहराने का समारोह मनाया। वहाँ पर जानकी देवी ,मदालसा बजाज - नारायण आदि स्वयंसेवी भी आ गए थे। उन्होंने लड़कियों को समझाया कि उत्सव का क्या मतलब होता है । लेखक और उनके साथियों ने एक बार मोटर में बैठ कर सब तरफ घूमकर देखा तो बहुत अच्छा महसूस हो रहा था। जगह - जगह पर लोग फोटो खींच रहे थे। लेखक और उनके साथियों ने भी फोटो खिचवाने का पूरा प्रबंध किया हुआ था। दो - तीन बाजे पुलिस कई आदमियों को पकड़ कर ले गई।जिनमें मुख्य कार्यकर्ता पूर्णोदास और पुरुषोत्तम राय थे।

पाठ व्याख्या

- सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था पर वह प्रबंध कर चुका था। स्त्री समाज अपनी तैयारी में लगा थी। जगह - जगह से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकलने की तथा ठीक स्थान पर पहुँचने की कोशिश कर रही थी। मोनुमेंट के पास जैसे प्रबंध भोर में था वैसे करीब एक बजे नहीं रहा। इससे लोगों को आशा होने लगी कि शायद पुलिस अपना रंग ना दिखलावे पर वह कब रुकने वाली थी। तीन बजे से ही मैदान में हजारों आदमियों की भीड़ होने लगी और लोग टोलियाँ बना -बनाकर मैदान में घूमने लगे। आज जो बात थी वह निराली थी।

  शब्दार्थ -

  टोलियाँ - समूह

  निराली - अनोखी

  सुभाष बाबू के जुलूस की पूरी ज़िम्मेवारी पूर्णोदास पर थी (उन्हें पुलिस ने पकड़ लिया था)परन्तु वे पहले से ही अपना काम कर चुके थे। स्त्रियाँ अपनी तैयारियों में लगी हुई थी। अलग अलग जगहों से स्त्रियाँ अपना जुलूस निकालने और सही जगह पर पहुँचाने की कोशिश में लगी हुई थी। स्मारक के पास जैसा पुलिस का प्रबंध सुबह लग रहा था वैसा करीब एक बजे तक नहीं रहा। इससे लोगो को लग रहा था कि पुलिस अब ज्यादा कुछ नहीं करेगी परन्तु पुलिस पीछे कब हटने वाली थी। तीन बजे से ही मैदान में हज़ारों आदमियों की भीड़ इकठ्ठी होने लगी थी और लोग समूहों में इधर -उधर घूमने लगे थे। आज की बात ही अनोखी थी।

पाठ व्याख्या

- जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी। पुलिस कमिश्नर का नोटिस निकल चुका था कि अमुक - अमुक धारा के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती। जो लोग काम करने वाले थे उन सबको इंस्पेक्टरों के द्वारा नोटिस और सूचना दे दी गई थी कि आप यदि सभा में भाग लेंगे तो दोषी समझे जाएंगे। इधर कौंसिल की ओर से नोटिस निकल गया था कि मोनुमेंट के निचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सर्वसाधारण की उपस्थिति होनी चाहिए। खुला चेलेंज देकर ऐसी सभा पहले कभी नहीं हुई थी।
- कौंसिल - परिषद
-
- (सभा को रोकने के लिए किये गए प्रयासों का वर्णन)
  जब से स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कानून तोड़ने का सिलसिला शुरू हुआ था तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे खुले मैदान में कभी नहीं हुई थी और ये सभा तो कह सकते है की सबके लिए ओपन लड़ाई थी। पुलिस कमिश्नर ने नोटिस निकाल दिया था कि अमुक -अमुक धारा के अनुसार कोई भी, कही भी, किसी भी तरह की सभा नहीं कर सकते है। जो लोग काम करने वाले थे उन सबको इंस्पेक्टरों के द्वारा नोटिस और सूचना दे दी गई थी अगर उन्होंने किसी भी तरह से सभा मे भाग लिया तो वे दोषी समझे जायेंगे।इधर परिषद की ओर से नोटिस निकाला गया था कि ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर स्मारक के निचे झंडा फहराया जायेगा तथा स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी। सभी लोगो को उपस्थित रहने के लिए कहा गया था। प्रशासन को इस तरह से खुली चुनौती दे कर कभी पहले इस तरह की कोई सभा नहीं हुई थी।

पाठ व्याख्या

- ठीक चार बजकर दस मिनट पर सुभाष बाबू अपना जुलूस ले कर मैदान की ओर निकले। उनको चौरंगी पर ही रोक दिया गया। परन्तु वहां पर लोगो की भीड़ इतनी अधिक थी कि पुलिस उनको वहां पर न रोक सकी। जब वे लोग मैदान के मोड़ पर पहुंचे तो पुलिस ने उनको रोकने के लिए लाठियां चलाना शुरू कर दिया। बहुत से लोग घायल हो गए। सुभाष बाबू पर भी लाठियाँ पड़ी। परन्तु फिर भी सुभाष बाबू बहुत ज़ोर से वन्दे -मातरम बोलते जा रहे थे। ज्योतिर्मय गांगुली ने सुभाष बाबू से कहा कि वे इधर आ जाएं। परन्तु सुभाष बाबू ने कहा कि उन्हें आगे बढ़ना है।
  यह सब तो अपने सुनी हुई लिख रहे हैं पर सुभाष बाबू का और अपना विशेष फासला नहीं था। सुभाष बाबू बड़े जोर से वन्दे -मातरम बोलते थे,यह अपनी आँख से देखा। पुलिस भयानक रूप से लाठियाँ चला रही थी। क्षितिज चटर्जी का फटा हुआ सिर देखकर तथा उसका बहता हुआ खून देखकर आँख मिंच जाती थी इधर यह हालत हो रही थी कि उधर स्त्रियाँ मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़ झंडा फहरा रही थी और घोषणा पढ़ रही थी। स्त्रियाँ बहुत बड़ी संख्या में पहुँच गई थी। प्रायः सबके पास झंडा था। जो वालेंटियर गए थे वे अपने स्थान से लाठियाँ पड़ने पर भी हटते नहीं थे।

पाठ व्याख्या

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

- **वालेंटियर - स्वयंसेवी**
  लेखक कहते हैं कि बहुत सी बाते तो वे सुनी-सुनाई लिख रहे हैं परन्तु सुभाष बाबू और लेखक के बीच कोई ज्यादा फासला नहीं था। सुभाष बाबू बहुत जोर -जोर से वन्दे - मातरम बोल रहे थे, ये लेखक ने खुद अपनी आँखों से देखा था। पुलिस बहुत भयानक रूप से लाठियाँ चला रही थी। क्षितिज चटर्जी का सिर पुलिस की लाठियों के कारण फट गया था और उनका बहता हुआ खून देख कर आँखे अपने आप बंद हो जाती थी। इस तरफ़ इस तरह का माहौल था और दूसरी तरफ स्मारक के निचे सीढ़ियों पर स्त्रियां झंडा फहरा रही थी और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ रही थी। स्त्रियाँ बहुत अधिक संख्या में आई हुई थी। लगभग सभी के पास झंडा था। जो स्वयंसेवी आए थे वे अपनी जगह से पुलिस की लाठियाँ पड़ने पर भी नहीं हट रहे थे।

गृहकार्य

- 1-11 बजे क्या हुआ?
- 2-जुलूस से आप क्या समझते हैं ?
- 3-मौनुमेन्ट में भीड़ कब होने लगी ?
- 4-मैदान में भीड़ कब होने लगी ?
- 5- सूचना क्या दी गई थी ?
- 6-जगह जगह फोटो क्यों लिया जा रहा था ?
- 7-कौन अपनी तयारी में लगा था ?
- 8-कानून भंग का कार्य क्यों शुरू हुआ ?
- 9-दोषी किसको समझाया जाएगा ?
- 10-चार बजे जुलूस ले कर कौन आए ?
- 11-जुलूस को कहाँ रोका गया ?
- 12-पुलिस जुलूस को क्यों रोक नहीं पाई ?
-
-

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP